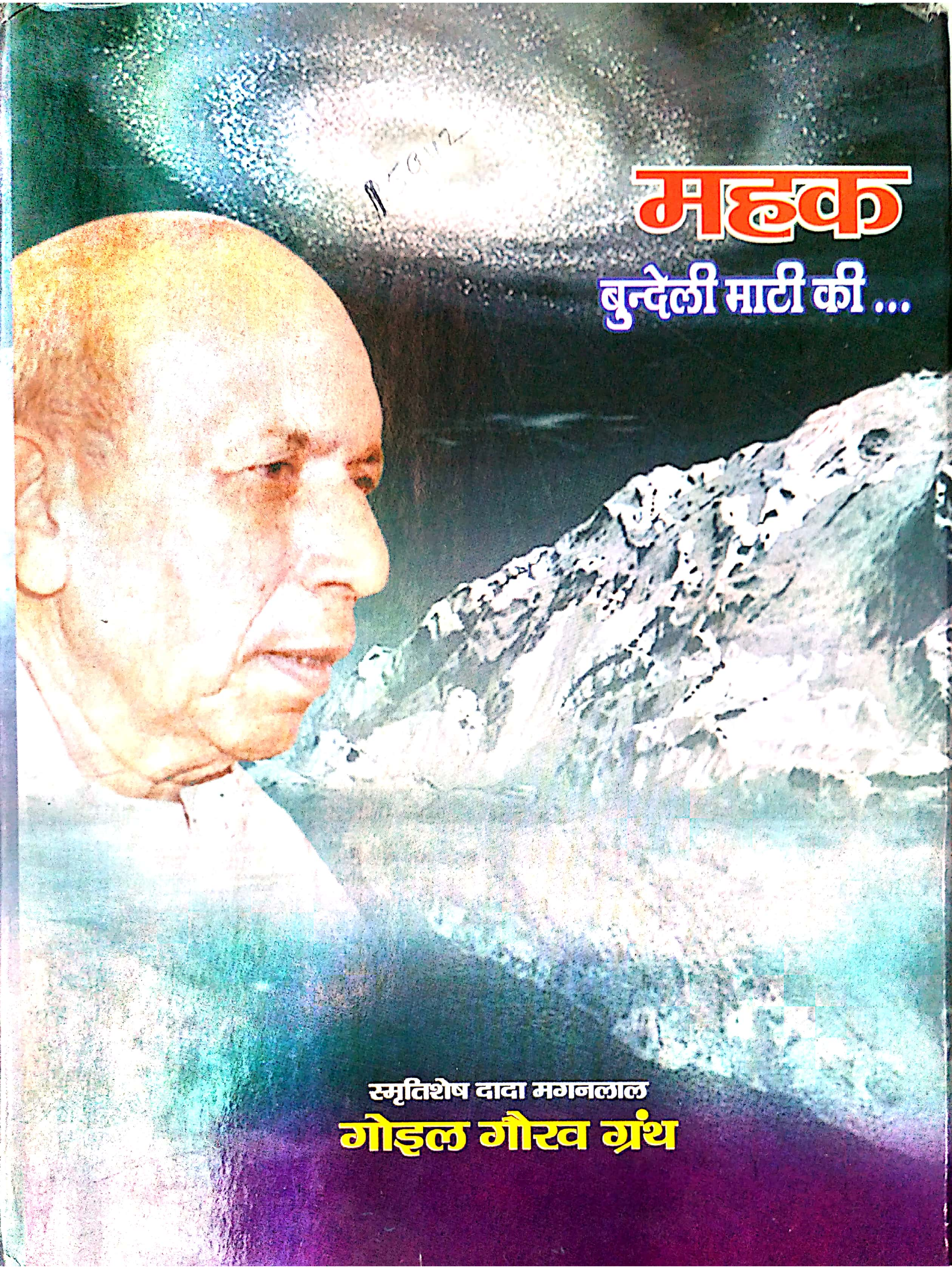

Scanned with OKEN Scanner

महक

बुन्देली माटी की

15942

संपादक

हरिविष्णु अवस्थी

प्रकाशक

स्मृतिशेष श्रद्धेय दादा मगनलाल

'गोइल गौरव ग्रंथ' प्रकाशन समिति

टीकमगढ़ (म.प्र.)

Scanned with OKEN Scanner

महक बुन्देली माटी की

प्रथम संस्करण - फरवरी 2013
मुद्रित प्रतियाँ - 700 प्रतियाँ

प्रकाशक :
स्मृतिशेष श्रद्धेय दादा मगनलाल गोइल 'गौरव ग्रंथ'
प्रकाशन समिति टीकमगढ़ (म.प्र.)

मुद्रक :
सुनील प्रिंटिंग प्रेस
टीकमगढ़ (म.प्र.)

शब्द संयोजन एवं कम्प्यूटर ग्राफिक्स :
विशाल आनंद रावत
सुनील प्रिंटिंग प्रेस
टीकमगढ़ (म.प्र.)

सहयोग राशि - रू. 500/-

- प्रकाशन समिति -

संरक्षक मण्डल

श्री पूरनचन्द्र जैन	**डॉ. वीरेन्द्र कुमार**	**श्री जयंत मलैया**	**श्री हरिशंकर खटीक**
वरिष्ठ अभिभाषक	सांसद	मंत्री, म.प्र. शासन	राज्यमंत्री
गुना (म.प्र.)	टीकमगढ़ लोकसभा क्षेत्र	जल संसाधन विभाग	अनु.जा., ज.जा. कल्याण

वरिष्ठ साहित्यकार : **आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल, डॉ. कैलाश विहारी द्विवेदी, डॉ. डी.पी. खरे 'प्रसाद'**
विशिष्ट सदस्य : **विनय जैन एड. गुना, इंजी. विमल जैन छतरपुर, रजनीश जैन एड. पन्ना**

● अध्यक्ष- हरिश्चन्द्र 'पुष्प', ● कार्यकारी अध्यक्ष- अभिनन्दन गोइल, ● वरिष्ठ उपाध्यक्ष- हरिविष्णु अवस्थी, ● उपाध्यक्ष- राजेन्द्र अध्यवर्यु, एन.डी. सोनी, डॉ. सुनीत जैन, ● मुख्य सचिव- कौशल किशोर भट्ट, ● सचिव एवं संयोजक-शीलचन्द्र जैन, ● सचिव- राजेन्द्र पस्तोर, ऋषभ गोइल, सुभाष जैन 'मामा', सुनील जैन 'प्रेस', लाल जी सहाय श्रीवास्तव, ● कोषाध्यक्ष-वीरेन्द्र सिंघई, सह ● कोषाध्यक्ष - अनिल भदौरा, ● सदस्य - अशोक गोइल, वीरेन्द्र बहादुर खरे, हरेन्द्रपाल सिंह, रामगोपाल रैकवार, राजीव नामदेव, अजीत श्रीवास्तव, ओ.पी. त्रिपाठी, प्रमोद खरे, श्रीमती रश्मि गोइल, वीरेन्द्र चंसौरिया, मनमोहन सोनी, सुनील घुवारा

Scanned with OKEN Scanner

159412

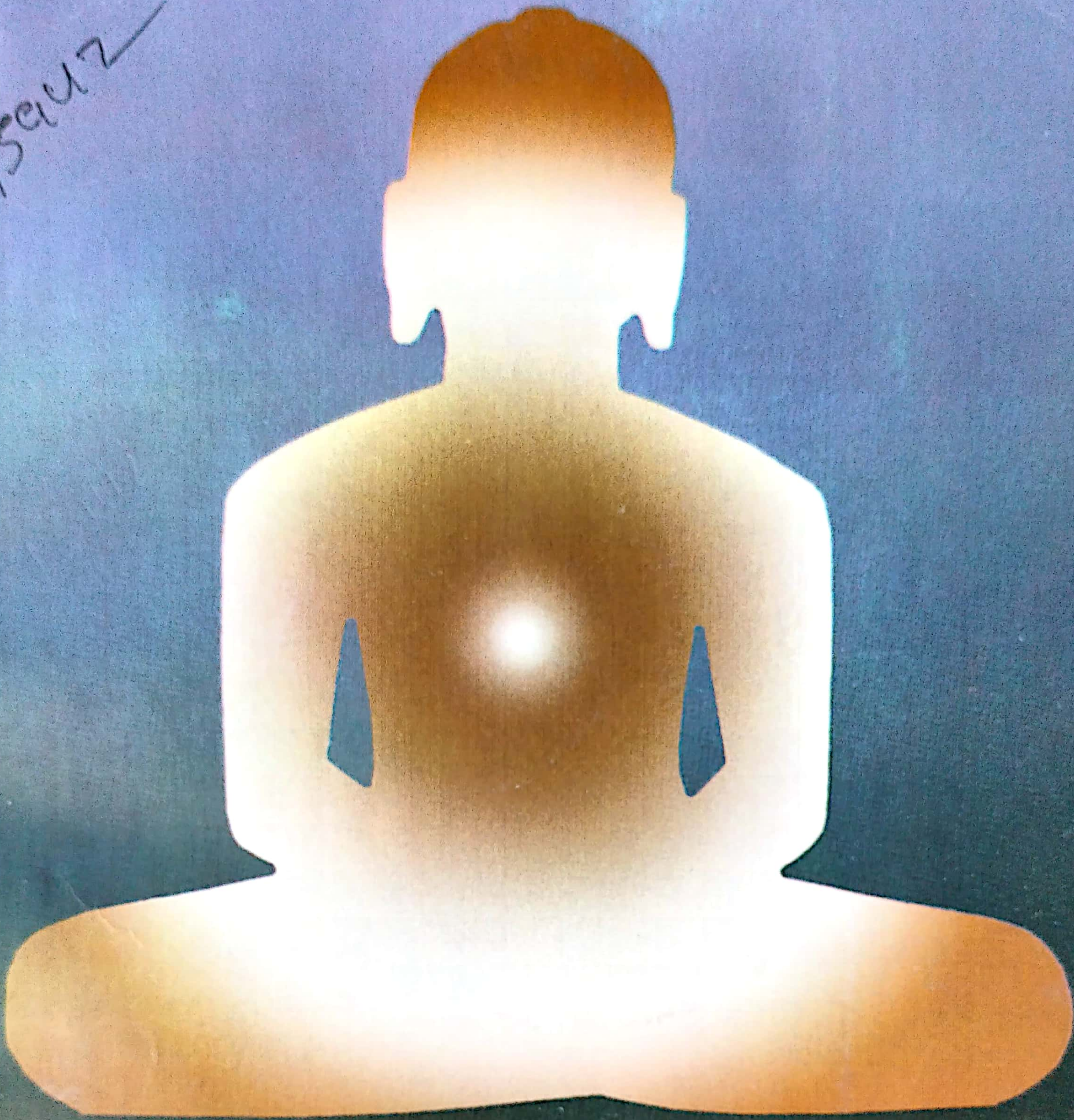

।। मंगलाचरण ।।

सर्व व्याप्येक चिद्रूप, स्वरूपाय परात्मने ।
स्वोपलब्धि प्रसिद्धाय, ज्ञानानन्दात्मने नमः ।।

अर्थात् – सर्वव्यापी एक चैतन्य रूप जिसका स्वरूप है और जो स्वानुभव प्रसिद्ध है
उस ज्ञानानन्दात्मक उत्कृष्ट आत्मा को नमस्कार हो ।

विद्वन्मनः कमलकोमल चक्रवाले या खेलति प्रतिफलं किल हंसिकेव ।
तां शारदां सकलशास्त्र समुद्रासान्द्र पारप्रदां प्रणमतां वरदां च वन्दे ।।
(कल्प सूत्र)

अर्थात् - जो पंडितों के मनरूपी कमल की कोमल पंखुड़ियों में से और प्रत्येक

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण
सरस्वती वंदना
आध्यात्मिक मंत्र
प्रकाशकीय
संपादकीय

❑ प्रथम अध्याय– स्मृतियों की आर्द्रता

स्व. श्री मगनलाल गोइल–संक्षिप्त जीवन परिचय
राजनीति के प्रकाश स्तंभ दादा गोइल – डॉ. वीरेन्द्र कुमार, सांसद
उन्होंने मुझे पुत्रवत् स्नेह दिया – यादवेन्द्र सिंह, विधायक
कद के छोटे लेकिन विशाल व्यक्तित्व के स्वामी – कैलाश ना. सारंग, पूर्व सांसद
अनासक्त कर्मयोगी की गौरव गाथा – हरिश्चन्द्र 'पुष्प'
दादा गोइल– स्मृति के झरोखों से – स्वामी प्रसाद पस्तोर, पूर्व विधायक
दादा जी जैसा कोई नहीं – डॉ. बहादुर सिंह परमार
नैतिकता और सहिष्णुता के उदाहरण – छोटेलाल खरे, स्वतंत्रता सं. से.
तदपि कहे बिन रहा न कोई – पं. कपिलदेव तैलंग
स्मृतियों की आर्द्रता – अभिनन्दन गोइल
आज़ादी का मतवाला क्रांतिदूत – डॉ. जफर हसन
उनमें महान शील और शालीन भाव के दर्शन हुए – श्रीमती रश्मि गोइल
कहाँ तुम चले गये (कविता) – पं. कपिलदेव तैलंग
एक विश्वसनीय व्यक्तित्व – दशरथ जैन, पूर्व मंत्री
उदारता के बोल – शोभाराम दांगी
सांस्कृतिक समन्वय की बुन्देली भित्ती के चित्रकार – प्रभुदयाल मिश्र
ओशो की स्मृति में हुई आखें नम – डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन
सारा राष्ट्र नमन करता है (कविता) – लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'
सादा जीवन उच्च विचार – लक्ष्मी नारायण नायक, पूर्व सांसद
मेरे अभिन्न साथी – पं. रामरतन पाठक
श्री गोइल जी और उनकी मानवीयता – दुर्गा प्रसाद शर्मा, स्वतंत्रता सं.से.
श्रद्धेय को मेरी शब्द सुमनांजलि (कविता) – हरिविष्णु अवस्थी
मगन लाल गोइल मेरे संग्राम साथी – भगवानदास दुबे, स्वतंत्रता सं. से.
मेरे अग्रज तुल्य दादा गोइल जी – पं. गुणसागर सत्यार्थी

Scanned with OKEN Scanner

गाँधीवादी आचारों–विचारों से जुड़े रहे दादा जी	–	दयाराम नामदेव	71
श्रद्धांजलि, काव्यांजलि	–	लालजी सहाय श्रीवास्तव 'लाल'	72
आशीष आज दादा ने हमको पठाव है (कविता)	–	बी.एस. यादव	73
दादा गोइल के चरणों में श्रद्धांजलि (कविता)	–	डॉ. दुर्गेश दीक्षित	74
अमर विन्ध्यसुत (कविता)	–	सुरेन्द्र शर्मा 'शिरीष'	76
स्मृतिशेष श्रद्धेय दादा	–	राकेश गिरि गोस्वामी	77
उत्कृष्ट सम्मान के पात्र	–	बाबूलाल जैन 'सलिल'	77
पूज्यनीय दादा जी की सुखद डांट	–	देवेन्द्र पोतदार	78
शांतिपुरूष गोइल जी	–	महेन्द्र सिंह तोमर 'अंबुज'	79
अनथके राही	–	के.एल. सिंघई 'मधुर'	81
समन्वयवादी युग पुरूष	–	प्रो. बी.के. त्रिपाठी	82
परम् श्रद्धेय की पावन स्मृति	–	कपूरचन्द्र जैन 'बंसल'	83
काजल की कोठरी में कोहिनूर	–	पं. राजेन्द्र कुमार जैन 'चंदावली'	85
स्मृतियों में दादा जी	–	प्रो. आलोक कुमार जैन	86
श्रद्धेय गोइल जी	–	एड. श्रीमती शिवकली रूसिया	87
एक निर्मल व्यक्तित्व के धनी –दादा गोइल	–	डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया	88
सरलता, सौम्यता और सद्भाव	–	कैलाश मड़वैया	89
कर्मयोगी–मगनलाल जी गोइल	–	डॉ. रामनारायण शर्मा 'बुन्देल गौरव'	92
आध्यात्म रस के रसिक	–	पं. सुरेशचन्द्र 'पिपरा'	95
दादा गोइल सा मनुज कोई–कोई होता है (कविता)	–	के.एल. सिंघई 'मधुर'	96
आस्था विश्वास और मानवता के सजग प्रहरी	–	डॉ. के.एल जैन प्राचार्य	97
गोइल जी के साथ कुछ यादें	–	बाबूलाल नायक	98
हम सबके प्रिय दादा	–	अशोक कुमार जैन मा. साहब	99
आम आदमी के प्रति मदद में तत्परता का भाव	–	प्रो. डॉ. इन्द्रजीत जैन	102
मृदुभाषी और मिलनसार थे दादा	–	बालचन्द्र मोदी	103
मेरे भ्रात मित्र स्व. गोइल जी	–	डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी	104
देश हित में सारा जीवन लगाने वाले मेरे सहपाठी	–	पं. कमल कुमार शास्त्री	105
श्री गोइल जी के प्रति श्रद्धांजलि	–	श्रीमती सुभद्रा जैन	105
दादा गोइल द्वारा वृक्षारोपण समारोह	–	अशोक कुमार जैन मा. साहब	106
दादा एक योगी के रूप में	–	वीरेन्द्र वैद्य सर्राफ 'योगाचार्य'	108
दादा मेरे योग गुरू	–	हरिशंकर समारी	108
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : हम सबके दादा	–	डॉ. प्रभाषचन्द्र जैन	109

15942

Scanned with OKEN Scanner

सहज, सरल व्यक्तित्व के प्रतीक : दादा गोइल – श्रीमती मनोरमा शर्मा
जो कुछ मैने जाना – इं. ऋषभ गोइल
सर्वधर्म समभाव में थी अडिग आस्था – अशोक गोइल 'एडवोकेट'
नमन करो इस शास्वत सत को – अनुराग जैन
दादा जी के समर्पण से ही विकसित हुआ... – सनत कुमार जैन प्राचार्य
पावन गौरव गाथा (कविता) – पं. बाबूलाल द्विवेदी
चरैवेति–चरैवेति – इं. अभिनव गोइल
इतइ–कितउँ हो आप – प्रभु श्रीवास्तव 'पीयूष'
उनका जीवन अनुकरणीय खुली किताब – श्रीमती प्रीति गोइल
बापू के किरदार थे दादा (कविता) – गनी अहमद गनी
उनके आशीषों की महक – इं. अमितप्रभ गोइल
जब चाचा गोइल जी मेरे विवाह के पंडित बने – डॉ. महेन्द्र जैन पोतदार
मानव मूल्यों के निर्भीक प्रहरी – मा. चन्द्रभान जैन
गोइल जी को श्रद्धा सुमन (कविता) – अवध विहारी श्रीवास्तव
मेरे मौसाजी दादा मगनलाल जी गोइल – शीलचन्द्र जैन
श्रद्धांजली दादा गोइल – राजीव नामदेव 'राना लिधौरी'
Truly Grand : My Nanaji – सौरभ जैन
Shower of love and care – सुप्रभ जैन 1
ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया – एड. पूरनचन्द्र जैन 1
जीवन की स्वर्णिम यादें – श्रीमती इन्द्रा जैन
हो गई अमर कहानी (कविता) – एड. रतिभानु तिवारी 'कंज'
मैंने दादा को जैसा देखा – कौशल किशोर भट्ट
पूज्य बापू की जीवन यात्रा – राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय से साभार

❑ द्वितीय अध्याय– श्रद्धा सुमन

फेसबुक पर श्रद्धांजलि – श्रीमती प्रीति गोइल
म.प्र. विधानसभा में श्रद्धांजलि – म.प्र. विधानसभा कार्यवाही से साभार 1
पंकजवत् दादा गोइल जी – पं. गुलाबचन्द्र पुष्प, ब्र. जय निशांत 1
श्रद्धांजलि ज्ञापन महावीर ट्रस्ट – प्रदीप कासलीवाल, जयसेन जैन 1
श्रद्धांजलि भारत विकास परिषद टीकमगढ़ – 1
श्रद्धांजलि राष्ट्र भाषा प्रचार समिति – 1
संस्थाओं एवं विशिष्ट जनों की श्रद्धांजलि – 172-

❑ तृतीय अध्याय– संयत संभाषण 211–
विधानसभा में दादा द्वारा दिए भाषणों के कुछ प्रसंग– म.प्र. विधानसभा कार्यवाही से साभार 213–241
सम्मान समारोह एवं पुरस्कार वितरण – 242–245

❑ चतुर्थ अध्याय– भारतीय लोकतंत्र का काला अध्याय 247–253
राजा करे सो न्याय, पासा पड़े सो दाव – मगन लाल गोइल 249
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है (कविता) – रामधारी सिंह दिनकर 253
विषजयी संघर्ष(कविता) – हरीभाऊ जोशी 254

❑ पंचम अध्याय– सौंधी माटी के सपूत 255–292
दुलर्भ कार्यकर्ता पं. रामसहाय तिवारी – मगन लाल गोइल 257
बोधगम्य व्यक्तित्व चतुर्भुज पाठक – मगन लाल गोइल 260
स्वतंत्रता पुकारती (कविता) – जयशंकर 'प्रसाद' 263
कुशाभाऊ ठाकरे–एक वंदनीय व्यक्तित्व – मगन लाल गोइल 264
स्वमेव मृगेन्द्रता – मगन लाल गोइल 267
पं. कृष्ण किशोर द्विवेदी– जीवन के कठिन प्रसंगों... – मगन लाल गोइल 272
आत्मानुशासक शुक्ल जी – मगन लाल गोइल 274
सामाजिक समस्याओं के प्रति सतत् जागरूक – मगन लाल गोइल 277
पुष्प की अभिलाषा (कविता) – माखन लाल चतुर्वेदी 279
मेरे सुख के उद्योगी और दुःख के सहभोगी ... – मगन लाल गोइल 280
सेवा का काव्य, समर्पण की कविता – मगन लाल गोइल 283
पीर पर्वत सी (कविता) – दुष्यंत कुमार 286
शब्द साधक श्री सुरेन्द्रनाथ श्रीवास्तव – वीरेन्द्र बहादुर खरे 287
जो तुम आ जाते एक बार (कविता) – महादेवी वर्मा 291
आओ फिर से दिया जलायें (कविता) – अटल बिहारी वाजपेयी 292

❑ षष्टम् अध्याय– चित्रमय झांकी 293–308

❑ सप्तम् अध्याय – वंदो वीर बुन्देल वसुंधरा (बुन्देलखण्ड का इतिहास, कला और संस्कृति) 309
जीवन यात्रा के पड़ाव – यशपाल जैन 311
बुन्देलखण्ड में स्वाधीनता की अग्नि शिखायें – डॉ. बहादुर सिंह परमार 316
गोहना में जैन संस्कृति के अवशेष – डॉ. रामस्वरूप ढेंगुला 327
ओरछेश वीर सिंह जू देव का हॉकी खेल में अवदान – पं. हरिविष्णु अवस्थी 329
सनकुआ कौ हाल – डॉ. श्याम बिहारी श्रीवास्तव 334
बुन्देली लोक चित्रकला में नारी – डॉ. हरिमोहन पुरवार 337

Scanned with OKEN Scanner

बुन्देलखण्ड की प्रमुख लोक कलायें	–	डॉ. बहादुर सिंह परमार	347
बुन्देली अहाने	–	अजीत श्रीवास्तव (एडवोकेट)	350
इतिहास के भ्रम का परिमार्जन करती पाण्डुलिपियाँ	–	डॉ. कमलेश थापक	351
गौधन और बुन्देली धरती (कविता)	–	लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'	353
प्राचीन ग्रंथों में भूगर्भ जल स्रोत खोजने की विधि	–	पं. उदयशंकर दुबे	354
डब्ल्यू.एच. स्लीमैन के यात्रा वृतांत में टीकमगढ़	–	के.बी.एल. पाण्डे	357
टीकमगढ़ नगर इतिहास के आइने में	–	एन.डी. सोनी	361
मेला अब्दापीर	–	रामसहाय नगाइच	368
आस्था के प्रतीक बुन्देलखण्ड के लोकदेवता	–	राजीव नामदेव 'राना' लिधौरी	370
मामौन पहाड़ी एक उभरता तीर्थ	–	श्रीराम अग्रवाल	372
बुन्देलखण्ड की ढोला गायकी	–	डॉ. लखनलाल खरे	374
बुन्देली कहावतें और विवाह संस्कार	–	डॉ. वीरेन्द्र 'निर्झर'	376
लोक साहित्य में मानव मूल्य और राष्ट्रीय चेतना	–	डॉ. परशुराम शुक्ल 'विरही'	379
केशव और तुलसी का मिलन स्थल	–	डॉ. जगदीश प्रसाद रावत	383
बुन्देली ख्याल का उद्भव एवं विकास	–	डॉ. श्रीनारायण पाठक	386
बुन्देलखण्ड की लोकरागिनी	–	श्रीमती सुधारानी श्रीवास्तव	392
दलपतिराव रायसा में इतिहास तत्व	–	डॉ. हरिसिंह घोष	396
प्रतिभाशाली कवि पं. देवीदास जी जैन	–	बाबूलाल जैन 'सुधेश'	398
बुन्देलखण्ड में तीर्थाटन एवं पर्यटन	–	आर.एस. शर्मा	400
बुन्देलखण्ड की वीरांगनायें	–	शकूर मुहम्मद	403
बुन्देली लोक साहित्य में पानी का महत्व	–	डॉ. आर.बी. पटेल 'अंजान'	406
राम वनगमन पथ का महत्वपूर्ण तीर्थ सारंग	–	डॉ. सुरेश पराग	408
लोक देवता कारसदेव	–	अजीत श्रीवास्तव (एडवोकेट)	412
धार्मिक तीर्थ क्षेत्र रतनगढ़ की माता	–	डॉ. कामिनी (डी.लिट्.)	414
बुन्देली संस्कृति के अनसुरजे प्रश्न ?	–	डॉ. डी.आर. वर्मा 'बेचैन'	417
लोक कवि ईसुरी और उनकी राम भक्ति	–	डॉ. कुंजीलाल पटेल 'मनोहर'	420
चंदेल कालीन लोक महाकाव्य आल्हा	–	डॉ. श्रीमती गायत्री बाजपेयी	424
ओरछा राज्य के अन्यतम आचार्य कवि	–	डॉ. देवी प्रसाद खरे 'प्रसाद'	429
बम्हौरीकला के दुर्ग की दास्तान	–	रामसहाय खरे	432
गायन, वादन और नृत्य कला की त्रयी...	–	बटुक चतुर्वेदी	434
वाकाटकों की एक ऐतिहासिक नगरी शक्तिभैरों	–	ओमप्रकाश पुरोहित	439
बुन्देली लोक जीवन में आर्थिक नियोजन के सूत्र	–	अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद'	441

महक बुन्देली माटी की...

Scanned with OKEN Scanner

केशवकृत रामचन्द्रिका का श्लेष सौन्दर्य	–	डॉ. ए.के. जड़िया	444
बुन्देलखण्ड में विलुप्त होती लोकविधा– नौटंकी	–	शिवभूषण सिंह गौतम	449
बुन्देलखण्ड का लोक नाट्य	–	पं. उमाशंकर उपाध्याय	452
होली – हमारी पूर्णता का उत्सव	–	डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी	454
पूर्व ओड़छा राज्य का इतिहास	–	डॉ. काशीप्रसाद त्रिपाठी	457
ओरछेश मधुकरशाह जू देव की अनूठी वैष्णव निष्ठा	–	डॉ. जवाहर लाल द्विवेदी	466
बुन्देली लोक गीतों में शीतऋतु	–	डॉ. दुर्गेश दीक्षित	468
मुसाहिब हनुमंतप्रसाद 'हनुमंत' और उनका काव्य	–	पं. मनमोहन पाण्डेय	473
बल्देवगढ़ की तोप–एक मुहावरा	–	कु. रामकिशोरी गुप्ता	476
मानक बुन्देली–व्यापक बुन्देली	–	पं. कपिलदेव तैलंग	477
टीकमगढ़ जिले के परम् पूज्य जैन संत	–	कपूरचन्द्र जैन 'बंसल'	480
वात्सल्यमूर्ति प.पू. आर्यिका 105 सरलमति माताजी	–	श्रीमती इन्द्रा गोइल	487
विदुषीरत्न प.पू. 105 आर्यिका प्रत्यक्षमति माताजी	–	श्रीमती इन्द्रा गोइल	488
नगर टीकमगढ़ की आध्यात्मिक विभूतियाँ	–	डॉ. नरेन्द्र कुमार जैन (हौम्यो)	489
जैन और वैष्णवों के पारस्परिक मेल–मिलाप...	–	श्री वासुदेव शरण अग्रवाल	492
बुन्देलखण्ड की दो अद्भुत कृतियाँ	–	आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल	495
Gardens of Orchha	–	Safiya Khan	500
क्रांतिवृत राजा मर्दन सिंह	–	डॉ. गौरीशंकर उपाध्याय 'सरल'	509
अटका में अटका	–	रामगोपाल रैकवार 'कँवल'	511
लोभ का फल (बुन्देली लघु कथा)	–	पं. हरिविष्णु अवस्थी	514

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

जीवन में आश्चर्यजनक घटनाएँ घटती रही हैं । हमेशा ऐसा लगा कि बेसहारा हो गया हूँ। क्या होगा ? पर परमात्मा ने ऐसे सहारे भेजे जिनकी लम्बी फेहरिस्त जीवन में है।

मैं सर्वधर्म सम्भावी बचपन से हूँ, उसी अनुरूप जीवन में जो भी साधना बनती है, करता हूँ, लेकिन किसी कौम के प्रति या किसी धर्म के प्रति अश्रद्धा करना हमारी फितरत में नहीं है। अब तो ध्यान के बाद सबकी भले की कामना करता हूँ।

सब मिलाकर जैसा जो कुछ भी बना है वो सबके सामने है।

— मदन लाल गोइल